वैदिक पर्यावर्णिक संस्कृति समस्यायें एवं समाधान : एक पर्यवेक्षण

डॉ. सूक्ष्म कालिया
प्रवक्ता (संस्कृत), बजीर राम सिंह राजकीय महाविद्यालय देहरी (कांगड़ा) हिमाचल प्रदेश, भारत

Abstract

Environment problem is one of the most dangerous problem of the present world. In Vedic period special emphasis were given to preserve our environment. At that time people were aware of different types of environmental problems and their solutions. These solutions, if applied, may reduce the environmental problems of present world.

भूमिका

वेद सम्पूर्ण आर्य वाङ्मय को प्राण है। वेद के बारे में कहा जाता है

सर्वज्ञानमयो हि सः वेद के एक शब्द के प्रयोग से ही इहलौकिक तथा पारलौकिक दो फलों की प्राप्ति होती है। सम्पूर्ण विश्व यदि किसी समस्या को लेकर चिन्तित है तो वह है पर्यावर्णिक समस्या। समस्त प्राणी जगत के अस्तित्व के लिए पर्यावरण का सन्तुलन अपरिहार्य है। सर्वविदित है कि मनुष्य प्रकृति से जन्मा पला है। प्रकृति ही उसे सिखाती है और उसी में ही सब विलीन हो जाता है। प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व में ईश्वर का वास है। यथा ईशोपनिषद में भी कहा गया है :

ईशावस्यमिंद सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्

प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध सहस्र शताब्दियों पुरातन है। आज हम एक ऐसे विश्व में जी रहे है जिसका सम्पूर्ण ढांचा विशाल औद्योगिक ईकाईयों से मिल कर बना है और प्रौद्योगिक ईकाईयों से मिल कर बना है और प्रौद्योगिकी हमारे परिवेश और चिन्तन का अभिन्न अंग बन चुकी है। कहने को तो हमस सब चारों ओर का वायुमण्डल, जिसमें हम रहते हैं और सब जीव मिल कर पर्यावरण बनाते हैं। पुराकाल में मनुष्य प्रकृति के साथ विल्कुल भी छेड़छाड नहीं करता था लेकिन अब मानव ने उसकी मूल सरंचना में छेड़छाड कर व्यवस्था को अव्यवस्थित कर दिया है, अतः पर्यावरण की असन्तुलित दशा आज सम्पूर्ण विश्व के लिए चिंता का विषय है।

पर्यावरण की व्युत्पत्ति।

परि आङुपसर्गाभ्यांल्यूट प्रत्ययेन संयुक्तम्
वृञ् धातुना च निष्पन्नं पर्यावरण संज्ञकम्।।

अर्थात् पर्यावरण शब्द की व्युत्पत्ति परि + आङ उपसर्ग पूर्वक वृञ धातु से ल्युट् प्रत्यय से निष्पन्न हुई है।

व्युत्पत्ति लभ्य अर्थः

भूमौ परितः आच्छादकम् आवरणं वा सर्वः तत्त्वं यद अस्मान् प्रभावयति यस्मिश्च वयं निवासामः येन च वयं जीवामः इति।

अर्थात् पृथ्वी के चारों ओर ढ़कने वाले या अवरण एवं तत्सम्वद्ध सभी तत्त्व जो हमें प्रभावित करते और जिसमें हम निवास करते या जिसके द्वारा हम जीवन प्राप्त करते हैं उसे पर्यावरण कहते हैं।

संस्कृति : संस्कृति शब्द रनम् उपसर्ग कृ धातु से कितन् प्रत्यय लगाकर बना है। संस्कृति में आचार विचार। रहन–सहन व्यवहार परम्परायें आदि सभी चीजों को शामिल कर लिया जाता है जो मानव जीवन को प्रभावित करती है।

पर्यावर्णिक पक्ष : आज विश्व की यदि कोई सांझी समस्या है तो वह पर्यावरण की है। पार्थिव पक्ष – पार्थिव पक्ष में मूलभूत आवश्यकतायें रोटी कपड़ा और मकान है जो सिर्फ अर्थ तथा काम को पूरा करती है।

ऐतिहासिक मूल्य : वैदिक संस्कृति निर्वाधरूप से प्रवाहित रही है। कालक्रम से अविच्छिन है। प्रत्येक कालमें आवश्यकतायें वदलती रही, मूल्य बदलते रहें, समय के चक्र में वदलती संस्कृति ने पर्यावरण प्रदूषण को जन्म दिया है

चिन्मय मूल्य : इन्हें हम याज्ञिक मूल्य भी कह सकते है। लोक सग्रंह की भावना से दूर हटकर देवत्व को प्राप्त होना। नीति और व्यवाहर यदि हम इन दो शब्दों को याद रखे तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से छुटकारा पा सकते है।

पर्यावरण का आधार पंच भौतिक तत्त्व

पृथ्वी, जल, वायु अग्नि तथा आकाश इन पांच भौतिक तत्वों से सृष्टि की रचना हुई है। प्रकृति का प्रत्येक प्राणी इसी भौतिक सृष्टि का आधार है। मानव भी इसी सृष्टि का एक अंग है। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए समस्त प्राणी का इन पांच भौतिक तत्त्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश के साथ परस्पर संतुलन बनाये रखना आवश्यक है।

पृथ्वी का लक्षण किया गया है

गन्धवती पृथ्वी : बंकिम चन्द्र चटजी ने सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम् शास्य श्यामला मातरम् में जिस पृथ्वी का चित्र अंकित है उसमें पर्यावरण संरक्षण का समग्रजीवन दर्शन निहित है। अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त पर्यावरण के प्रति मानव के उतरदायित्व का अवबोध कराता है।

अख्यं ते पृथिवी सयोनमस्तु वेद मतुव्य को प्ररेणा देते है कि तू उत्कृष्ञ खाद आदि के द्वारा भूमि को पोषक तत्त्व प्रदान कर। पृथ्वी के प्रति इस प्रकार का भाव जब होता है तो पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त रखने का भाव भी मन में रक्त आता है। करोड़ो जीव जन्तुओं के निवास स्थान भूमि की पवित्रता रखना हमारा कर्त्तव्य है।

जल

जल को जीवन कहा गया है इमने जल को देवता और अमृत माना है ही भाव हमं जल को प्रदूषित करने से रोता ह ैजल को पृथ्वी प्रदूषिद करने से रोकता ह ैजल को पृथ्वी का रस कहा गया है। (शतपथ ब्राह्मण 1.3.3) में वेदी पर जल छिडकाने का उल्लेख मिलता है साथ ही अवशिष्ट जल को औषद्यियों की जड़ में डालने का उल्लेख मिलता है।

मधुदाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः

आज सतही तथा भूमिगत जील संसाधनों के अन्धा धुन्ध दोहन के कारण आज अनेक देशों में जल संकट उपस्थित हो गया है। परन्तु आज भौतिकता की होड़ में जल को मात्र पानी समझकर उसका दुरूपयोग किया जा रहा है। यही प्रदुषित जल जब हमारे शरीर में जाता है तो वह रोगों को उत्पन्न करता है। इसलिए नदियों की पवित्रता बनाये रखना एवं जल था दुरुपयोग रोकना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

अग्नि

वेदों में अग्नि को देवता माना है। अग्नि सबको भस्म करके पवित्र करने की क्षमता रखती है पर्यावरण को शुद्ध करने का सर्वोत्तम साधन यज्ञ को माना है यज्ञ का आधार अग्नि ही है। सम्पूर्ण विश्व में जो सृजन निर्माण और विकास की जो अविरल धारा व रही है तथा मन प्राण और भूत का जो निरन्तर संयोग वियोग हो रहा है वही यज्ञ है यज्ञ मानव शरीर में जीवित रहने और श्वास लेने की क्रिया भी है ये यज्ञ मनुष्य और प्रकृति के बीच सेतु बनाते हैं। इनके माध्यम से मनुष्य प्रकृति से सम्बन्ध जोड़ता है और उसकी शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता प्राप्त करता है। यज्ञ का पर्यावरण की दृष्टि से अव्यन्त महत्व है अथर्ववेद में समस्त ब्राह्मण्ड को बाधने वाला नाभि स्थल यज्ञ को बताया गया है।

यज्ञ विश्वस्य भुवनस्या नाभिः

अर्थवदेद में पर्यावरण की दृष्टि से प्रात सांय दोनों समय यज्ञ करना कहा है, क्योंकि इससे बल आरोग्य व अन्य दीर्घायु आदि सहस्रो लाभ होते है। (अर्थर्ववेद 19.55.3)

वायु

वायु का लक्षण है : रूपरहितः स्पर्शवान् इति। वायु प्राणी जीवन का आधार है अपनी भौतिक प्रगति की होड़ में वृक्षों का विनाश किया जा रहा है प्रत्येक वृक्ष जीवन का आधार है उसमें किसी न किसी देवता का वास है। वृक्षों से शुद्ध वायु मिलती है। वृक्ष ही वर्षा का आधार है पर्यावरण को संतुलित करने के लिए वृक्षों का सर्वाधिक योगदान है। इसलिए वैदिक ऋषि कहते है।

नमः वृक्षेभ्यः वनानाम पतये नमः औषधीनाम पतये नमः अख्यानाम पतये नभ' (यजुः 16,17,18,19,20)

आकाश

अंतिम तत्त्व आकाश है जिसका गुण है शब्द आकाश की महिमा पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में अकथनीय है। वैदिक ऋषियों ने शन्ति प्रकरण में सर्वप्रथम धौ तथा अन्तरिक्ष की शान्ति का उल्लेख किया है ऋग्वेद में आकाश शब्द के लिए धौ शब्द का प्रयोग लगभग 500 बार किया गया है।

समस्यायें एवं समाधान।

पर्यावरण समस्या वास्तव में हमारे दोषपूर्ण रहन–सहन का ही परिणाम है। आज मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का शोषण कर रहा है। पर्यावरण प्रदुषण स्रोतों में आधुनिक वाहनों एवं मशीनों का शोर कारखानों की चिमनियों से निकलता धुआ तथा अनेक जहरीले अवशिष्ट पदार्थों ने जल और पृथ्वी को बुरी तरह प्रदुषित कर दिया है। वैदिक माल से जल संरक्षण के प्रति हमारे ऋषि पूरी तरह जागरूक थे। आज हजारों वर्षों की उपेक्षा ने आज हमें विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। हम नदियों को सुरक्षित नहीं रख पाये। जलीय जन्तु नष्ट हो रहे थे। अगर यही उपेक्षा पूर्ण धारण रही जो अवश्य ही एक दिन समस्त प्राणी जगत शुद्ध पेयजल की त्रासदी से ग्रस्त होगा। आज नदियों की दुर्दशा किसी से छिपि नहीं है। आज इसी गंगा तट से गुजरते है तो हमें अपनी नाक बंद करनी पड़ती है। मानव तुच्छ लाभ के लिए वृक्षों को अधिक से अधिक काट रहा है जो कि हमारे प्राणदाता तथा अन्नदाता भी है। एक वृक्ष जीवित रहते हुए तो उपकार करता ही है काटने के बाद भी हमारे घर की शोभा को बढ़ाता है आधुनिक कृषि पद्धति से भी पर्यावरण प्रदूषित होता है आर्थिक विकास की होड में हमने कई संकट खड़े कर लिये हैं। हमारी कृषि आज परावंलबी होती जा रही है। कृषि पतन की ओर जा रही है इसका प्रमुख कारण कीटनाशकों का बढ़ता प्रयोग है इस कारण आज बड़ी मात्रा में भूमि बजर होने का संकट खड़ा हो गया है। पर्यावरण प्रदूषण का एककारण विश्व जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से तीव्र नगरीकरण होता है। मानव तुच्छ लाभ के लिए वृक्षों को अधिक से अधिक काट रहा है। लकड़ी का उपयोग हम मकान बनाने के लिए करते हैं। लकड़ी कम होने पर दूसरे देशों से लकड़ी आयात होती है जहां जंगल कम हो जाते है वहां वर्षा भी कम होती है पेड़ पौधों की कमी के कारण और प्राणी जगत का घनत्व अधिक होने के कारण वायु प्रदुषित हो रही है।

समाधान : हमारे ऋषियों ने समाज में कुछ प्रथाऐं एवं परम्पराऐं प्रचलित की जिससे प्रकृति के प्रति आदर भाव बना रहे। प्रत्येक परिसवार को कुछ आचार–विचारों का पालन अवश्य करना चाहिए यह क्रियाएं हमें याद दिलाती हैं कि प्रकृति हमारे लिए कितनी पूजनीय है शोषणीय नही वरगद का पेड़ लगाने रने मातृ ऋण तथा पीपल का पेड़ लगाने से पितृ–ऋण रने मुक्ति मिलत्व है। केल पीपल तुलसी आदि वनस्पति हमारे लिए पूजनीय वन गई है। महाराष्ट्र के पहाड़ों के वनों को देवराई कहा जात है वहां किसी भी पेड़ या टहनी काटने की अनुमति नही है और न ही वहां पशु पक्षियों का शिकार किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा किए गऐ प्रदुषण को शुद्ध करने के लिए नियामित यज्ञादि करे। यज्ञ से उठता हुआ सुगन्धित धुआं आन्तरिक्ष से भी आगे बढ़कर धुलोक तक पहुंच जाता है। यह धुम्र वायु को शुद्ध कर मेघों के माध्यम स`जल कर पवित्र करता है।

पर्यावरण समस्या समाधान के लिए मानव जनसख्या की अनियन्त्रित वृद्धि को नियन्त्रित करना मान व जनसंख्या और प्रकृति के बीच समन्वय बनाना। अधिक उत्पादन एवं प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराने के लिए खाद्यानों के उत्पादन में वृद्धि के लिए हरीखाद व जैव उर्वरको का प्रयोग करना चाहिए। रासयनिक कीटनाशकां एवं संरलेषित उर्वरको का कम से कम प्रयोग करना चाहिए। अपने पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकना चाहिए तााि अपशिष्ट पदार्थों को उपचारित करने के बाद ही विसर्जित करना चाहिए।

भविष्य के लिए पर्यावरण

प्राकृतिक जीव समुदाय तथा उनकी परिस्थितयां विशेषकर वन, मृदा व जल प्राकृतिक सम्पत्ति है। यह आवश्यक है कि उनके उपयोग में ऐसे नियमत से काम लिया जाये ि कवे आने वाली पीठियों के लिए भी उपलब्ध हो सके। परिस्थितिकी के नियमों को ज्ञान तथा विनियोग से ही हम प्राकृतिक सम्पत्ति का लाभ उठा सकते हैं और और साथ ही उनकी आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भी रख सकते है। जन जीवन तथा जल एक दूसरे से जुड़े हुए है। इनकी उपादेयता को पहचान कर स्वर्गीय के एम मुन्शी जी ने कहा था 6 पेड़ो का अर्थ जल जल का अर्थ रोटी और रोटी ही जीवन है।

भविष्य में पर्यावरण व्यवस्था को सुधारने की नीतियां बनाई जाये जैसे पर्यावरण नियोजन पर्यावरण कानून इत्यदि को प्रोत्साहित करना चाहिए। पर्यावरण सन्तुलन हेतु क्रियाशील संगठनों को बढ़ावा देना चाहिए। आज न केवल भारतवर्ष वल्कि समूचा विश्व पर्यावरण समस्या से निपट रहा है और भविष्य में इन समस्याओं से चिन्तित है। निम्नलिखित पर्यावरण समस्या के भविष्य के लिए विचारणीय है।

हाल ही में भारत से लुप्त होने वाले जन्तु जैसे चीता सिक्किम महाभृग, पश्चिमी हिमालय की पर्वतीय थटेर तथा गुलावी सिर वाली वतरव पहले कभी नवीवारणीय थे आज वे सदा सदा के लिए नष्ट हो रहे है इस दिशा में प्रयास की आवश्यकता है।

प्रत्येक नवीकरण संसाधन स्वयं को नवीकरण करने के लिए एक निश्चित प्राकृतिक चक्र पर निर्भर करते है किसी भी प्राकृतिक चक्र मं इस कार्य को करने के लिए सीमित क्षमता होती है। इस प्रकार नवीकरणीय संसाधनो भी अपनी सीमा हे उदाहरण स्वरूप भूमिगत जील एक नवीकरणीय संसाधन है इसका नवीकरण वर्षा के उस जल से होता है जो मिट्टी में रिस का जाता है बहुत से

क्षेत्रों में भूमिगत जल समाप्त हो रहा है क्योंकि वहां भूमि से पानी निकालने की दर भूमि में पानी रिसने की दर से बहुत अधिक होती थी। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि चाहे प्राकृतिक स्रोत का नवीकरण प्रकृति का हो उसे सभंल कर प्रयोग करने चाहिए की जरूरत है।

कृषि भूमि में ज्यादातर रासायनिक उर्वरको का इस्तेमाल भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिए किया जाता है। इन रासायनिक उर्वरकों से कृषि भूमि में रह रहे केचुएं व नाईट्रोजन स्थिरीकरण वाले जीवाणु भी नष्ट हो जाते है जबकि यह मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाने हैं यदि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग भली भांति समझकर न किया जाए तो ये दीर्घ काल में भूमि को बेकार बना देते हैं। इस सम्बन्धों में जागरूगता की आवश्यकता है।

कई बार मानव द्वारा कई बड़े भौगोलिक परिवर्तन जैसे बाध बनाना या अधिक खनन ने बहुत से क्षेत्रों में पर्यावरण को विगाड दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप उस क्षेत्र केवल को गम्भीर क्षति हुई है। वनों से बहुत दूरी पर लगाये गये उद्योगों के वायु प्रदुषण का वनों पर कुप्रभाव पड़ा है। बनों को रक्षित करने के लिए प्रयास की आवश्यकता है। कभी कभी प्रदूषक खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जाता है तथा सजीवों को हानि पहुंचाना है। उदाहरण के लिए लगभग सभी प्रमुख खाद्य श्रृखंला में प्रवेश कर चुकी है। मनुष्य में से बहुत सी स्वारूप सम्बन्धित समस्याऐं उत्पन्न हुई है। पक्षियों में इसने अण्डे के कवच को बनाने से रोका। इसके परिणाम स्वरूप स्फुटन से पहले अण्डा टूट जाता है। यह विचारणीय तथ्य है।

ऊर्जा की सतत् आपूर्ति के बिना किसी भी शहर का जीवन नहीं हो सकता है ऊर्जा स्रोतों का मूल्य ऊर्जा की बढती हुई भौग एवं सीमित आपूर्ति के कारण लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में ऊर्जा सकंट उत्पन्न हो रहा है अर्थात् ऊर्चा की आपूर्ति सीमित तथा मांग अधिक है।

आज विश्व का तापमान बढ़ता जा रहा है। जिन से कई राष्ट्रों में चिन्ता बनी हुई है। तापमान वृद्धि के कारण 2001 में कीनिया सुखाग्रस्त रहा। पर्यावरण सन्तुलन में गड़वड़ी के उत्पन्न होते ही ग्रीन हाऊस प्रभाव बढ़ने से कई रोगों से मानव पीड़ित हो रहा है तथा पृथ्वी पर रंगीस्तान का विस्तार हो रहा है। भविष्य में इस प्रकार की समस्या का निदान आवश्यक अन्यथा भावी पीढ़ियों का विकास अधर में लटक जाऐगा।

निष्कर्ष विश्व में परिव्याप्त पर्यावरण प्रदूषण की विभीषिका को देखते हुए पार्यावरण समस्त तत्वों के सर्वथा स्वानुकूल के लिए मन्त्रद्रष्टा ऋषियों द्वारा प्रार्थिक इस यन्त्र का अहर्निश मनन आवश्यक है। सूर्य से लेकर पृथ्वी पृथ्वी पर स्थित पदार्थों में सन्तुलन की प्रार्थना की गई है।

ऊँ द्यौ शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शन्तिः आपः शान्ति औषधयः
शन्ति वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः शन्तिः सर्व शन्तिः शन्तिदेव शन्तिः सामा रेधि।